B.A sem I MJC — लघुसिद्धान्तकौमुदी संस्कृत (हिन्दी व्याख्या)

संस्कृत के 14 माहेश्वर सूत्र (जिन्हें शिवसूत्र या चतुर्दश सूत्र भी कहते हैं) भगवान शिव के डमरु से निकली ध्वनियाँ हैं, जिन्हें महर्षि पाणिनी ने व्याकरण रचने के लिए ग्रहण किया था। ये सूत्र संस्कृत के सभी वर्णों को बताते हैं और इनसे प्रत्याहारों का निर्माण होता है जिसे हम (वर्णों के संक्षिप्त समूह) के नाम से भी जानते हैं। जो पाणिनी के व्याकरण का आधार है।

पाणिनि ने संस्कृत भाषा के तत्कालीन स्वरूप को परिष्कृत एवं नियमित करने के उद्देश्य से भाषा के विभिन्न अवयवों एवं घटकों यथा ध्वनि-विभाग, (अक्षरसमाम्नाय), नाम (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण), पद, आख्यात, क्रिया, उपसर्ग, अव्यय, वाक्य, लिङ्ग इत्यादि का समावेश अष्टाध्यायी में किया है।

अष्टाध्यायी में 32 पाद हैं जो आठ अध्यायों में समान रूप में विभक्त हैं। इसमें लगभग सम्पूर्ण विवेचन 4,000 सूत्रों में किया गया है, जो आठ अध्यायों में विभाजित है।

तत्कालीन समाज में लेखन सामग्री की दुष्प्राप्यता को ध्यान में रखते हुए पाणिनी ने व्याकरण को स्मृतिगम्य बनाने के लिए सूत्र शैली की सहायता ली है।

माहेश्वर सूत्रों की उत्पत्ति भगवान (शिव) के द्वारा किये गये ताण्डव (नृत्य) से मानी गयी है। ~~इसमें~~ भगवान शिव ने नृत्य करते हुए अपनी डमरु (ढक्का) को चौदह बार बजाने से चौदह सूत्रों के रूप में

ध्वनियों निकली, इन्ही ध्वनियों से व्याकरण का प्राकट्य हुआ। इसलिये व्याकरण सूत्रों के आदि प्रवर्तक भगवान नटराज को माना जाता है।

यथा— "नृत्तावसाने नटराजराजो ननाद ढक्कां नवपञ्चवारम्।
उद्धर्तुकामो सनकादिसिद्धानेतद्विमर्शे शिवसूत्रजालम्"॥

अर्थात :—

"नृत्य (ताण्डव) के अवसान (समाप्ति) पर नटराज (शिव) ने सनकादि ऋषियों की सिद्धि और कामना का उद्धार (पूर्ति) के लिये नवपञ्च (चौदह) बार डमरू बजाया। इस प्रकार चौदह शिवसूत्रों (माहेश्वर सूत्र) के जाल (वर्णमाला) प्रकट हुयी।"

माहेश्वर सूत्रों की कुल संख्या 14 है जो निम्नलिखित है :—

1) अ, इ, उ, ण्।
2) ऋ, ऌ, क्।
3) ए, ओ, ङ्।
4) ऐ, औ, च्।
5) ह, य, व, र, ट्।
6) ल, ण्।
7) ञ, म, ङ, ण, न, म्।
8) झ, भ, ञ्।
9) घ, ढ, ध, ष्।
10) ज, ब, ग, ड, द, श्।
11) ख, फ, छ, ठ, थ, च, ट, त, व्।
12) क, प, य्।
13) श, ष, स, र्।
14) ह्।

इन 14 सूत्रों में संस्कृत भाषा के समस्त वर्णों को समावेश किया गया है। प्रथम 4 सूत्र (अ, इ, उ, ण्, ऋ, ऌ, क्, ए, ओ, ङ्, ऐ, औ, च्।) में स्वर वर्णों तथा शेष 10 सूत्र व्यञ्जन वर्णों की गणना की गयी है।

1) स्वर वर्णों को अच् एवं
2) व्यञ्जन वर्णों का हल् कहा जाता है।

अच् एवं हल् ये प्रत्याहार हैं।

इस अच् प्रत्याहार के अन्दर पूरी स्वर वर्ण आजाते हैं। और हल् प्रत्याहार के अन्तर्गत पूरी व्यञ्जन वर्ण समाहित हो जाते हैं। इसे वर्ण संक्षेपक भी कहते हैं जैसे अंग्रेजी के एक उदाहरण देते हैं। Doctor शब्द का बोध कराने के लिए इसके आरम्भिक वर्ण D तथा अन्तिम वर्ण r तो (Dr) से Doctor शब्द का बोध करा दिया गया है। विशेष प्रत्याहार के बारे में आगे बताया जायगा।